शांतिवन। डायमण्ड हॉल में आयोजित समर्पण समारोह में देश के विभिन्न क्षेत्रों की दो सौ दस राजयोग अभ्यासी पवित्र ब्रह्माकुमारी बहनों ने अपना जीवन ईश्वरीय सेवार्थ परमात्मा शिव को समर्पित किया। इस अवसर पर सभी बहनों ने जीवनपर्यंत ईश्वरीय श्रीमत पर चलकर स्वयं तथा सभी के जीवन को सुख-शांति से भरने की प्रतिज्ञा ली।

# कथा सरिता

## गुब्बारे वाला

एक आदमी गुब्बारे बेच कर जीवन यापन करता था। वह गाँव के आस पास लगने वाली हाटों में जाता और गुब्बारे बेचता। बच्चों को लुभाने के लिए वह तरह-तरह के गुब्बारे रखता, लाल, पीले, हरे, नीले और जब कभी उसे लगता कि बिक्री कम हो रही है तो वह झट से एक गुब्बारा हवा में छोड़ देता, जिसे उड़ता देखकर बच्चे खुश हो जाते और गुब्बारे खरीदने के लिए पहुँच जाते।

इसी तरह एक दिन वह हाट में गुब्बारे बेच रहा था और बिक्री बढ़ाने के लिए बीच-बीच में गुब्बारे उड़ा रहा था। पास ही खड़ा एक छोटा बच्चा ये सब बड़ी जिज्ञासा के साथ देख रहा था। इस बार जैसे ही गुब्बारे वाले ने एक सफेद गुब्बारा उड़ाया वह तुरंत उसके पास पहुंचा और मासूमियत से बोला, "अगर आप ये काला वाला गुब्बारा छोड़ेंगे तो क्या वो भी ऊपर जाएगा?"

गुब्बारे वाले ने थोड़े अचरज के साथ उसे देखा और बोला, "हाँ बिल्कुल जाएगा, बेटे! गुब्बारे का ऊपर जाना इस बात पर नहीं निर्भर करता है कि वो किस रंग का है बल्कि इसपर निर्भर करता है कि उसके अन्दर क्या है।"

ठीक इसी तरह हम इंसानों के लिए भी ये बात लागू होती है। कोई अपनी लाइफ में क्या अचीव करेगा, ये उसके बाहरी रंग-रूप पर नहीं निर्भर करता है, ये इस बात पर निर्भर करता है कि उसके अन्दर क्या है।

## अपनी ताकत

एक बादशाह सर्दियों की शाम जब अपने महल में दाखिल हो रहा था तो एक बूढ़े दरबान को देखा जो महल के सदर दरवाज़े पर पुरानी और बारीक वर्दी में पहरा दे रहा था। बादशाह ने उसके करीब अपनी सवारी को रुकवाया और उस बूढ़े दरबान से पूछने लगा, "सर्दी नहीं लग रही!" दरबान ने जवाब दिया, "बहुत लग रही है हुज़ूर! मगर क्या करूँ, गर्म वर्दी है नहीं मेरे पास, इसलिए बर्दाश्त करना पड़ता है।"

बादशाह ने कहा, "मैं अभी महल के अंदर जाकर अपना ही कोई गर्म जोड़ा भेजता हूँ तुम्हें।" दरबान ने खुश होकर बादशाह को फर्शी सलाम किया और आजिज़ी का इज़हार किया। लेकिन बादशाह जैसे ही महल में दाखिल हुआ, दरबान के साथ किया हुआ वादा भूल गया। सुबह दरवाज़े पर उस बूढ़े दरबान की अकड़ी हुई लाश मिली और करीब ही मिट्टी पर उसकी अंगुलियों से लिखी गई ये तहरीर भी।

"बादशाह सलामत! मैं कई सालों से सर्दियों में इसी नाज़ुक वर्दी में दरबानी कर रहा था, मगर कल रात आप के गर्म लिबास के वादे ने मेरी जान निकाल दी।" सहारे इंसान को खोखला कर देते हैं और उम्मीदें कमज़ोर कर देती हैं।"

अपनी ताकत के बल पर जीना शुरू कीजिए, खुद की सहन शक्ति, खुद की खूबी पर भरोसा करना सीखें। आपका, आपसे अच्छा साथी, दोस्त, गुरू और हमदर्द कोई हो नहीं सकता।

## दो नावों में पैर

गुजरात में एक व्यापारी रहते थे। जिनका नाम सुखीराम था। सुखीराम सुबह-सुबह उठकर स्नान करने के बाद भगवान का भजन करते थे। फिर ठीक समय पर दुकान खोल कर बैठ जाते थे। उनकी ईमानदारी के चर्चे चारो तरफ थे। जब उनके बच्चे जवान हो गए तो उन्होंने पिताजी का काम सम्भाल लिया। सुखीराम मन ही मन सोचने लगे कि अब 60 वर्ष की आयु हो गई है। ऐसे में दुकान का लालच छोड़कर क्यों नहीं पूरा समय भगवान के भजन और जन सेवा में लगाया जाए। लेकिन उनका मन कहता, अभी तो नाती-पोतों को पढ़ाना लिखाना है। उनके विवाह करने हैं। इन सबसे निपट जाने के बाद ही दुकान छोड़ने के बारे में सोचना ठीक रहेगा।

इसी उधेड़बुन में वह एक दिन जब सुबह-सुबह टहलने जा रहे थे। सड़क पर एक सफाई करने वाली महिला झाड़ू लगा रही थी। सुखीराम जी को भी सड़क पर चलते हुए देखकर महिला ने कहा, सेठ जी आप एक तरफ हो जाइए। बीच में रहेंगे तो आपके ऊपर धूल पड़ जाएगी। एक तरफ हो जाएंगे तो धूल से बचे रहेंगे।

महिला के इन शब्दों ने सेठजी की आँखें खोल दी। उन्हें भी महसूस होने लगा कि दो नावों में सवार होने वाले का कभी कल्याण नहीं होता है। उन्होंने तुरंत दुकान की चाबी अपने बेटों को सौंपते हुए कहा - मैंने इतने साल कमाने में बिता दिए हैं, अब शेष जीवन कमाए हुए धन से लोगों की सेवा करना चाहता हूँ और भगवान का भजन करना चाहता हूँ।

यह सुनकर उनके बच्चों को बुरा तो लगा, लेकिन परिवारजनों ने सुखीराम को सभी दायित्व से मुक्त कर दिया। सुखीराम भक्ति और सेवा में डूब चुके थे। कुछ ही समय में सुखीराम को लोग भगत सुखीराम के नाम से जानने लगे।

नई दिल्ली। ज्ञानचर्चा के पश्चात् रमेश पोखरियाल,यूनियन मिनिस्टर,ह्युमन रिसोर्स डेवलपमेंट, राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय को शॉल पहनाकर सम्मानित करते हुए। पोखरियाल जी को माउण्ट आबू में होने वाले ग्लोबल सम्मिट कम एक्सपो में आने का निमंत्रण भी दिया गया।

फिरोज़ाबाद-उ.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र पर आयोजित कार्यक्रम में योगासन करते हुए मेयर नूतन राठौर, ब्र.कु. बहनें तथा अन्य।

वैर-भरतपुर(राज.)। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर प्रशासन द्वारा आयोजित कार्यक्रम के दौरान उपखण्ड अधिकारी विशम्भर दयाल शर्मा, विकास अधिकारी रामफल शर्मा तथा तहसीलदार रणजीत सिंह को ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए उपसेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. संतोष बहन।

जींद-हरियाणा। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर कार्यक्रम में मंचासीन हैं ब्र.कु. विजय दीदी, ब्र.कु. विजय भाई तथा ब्र.कु. मीना।

बिहार शरीफ-नालंदा। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर शोभा यात्रा निकाल राजयोग का संदेश देते हुए ब्र.कु. अनुपमा, ब्र.कु. पूनम तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

तोशाम-हरियाणा। मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती की पुण्य स्मृति दिवस पर उनके व्यक्तित्व के बारे में बताते हुए ब्र.कु. मंजू।